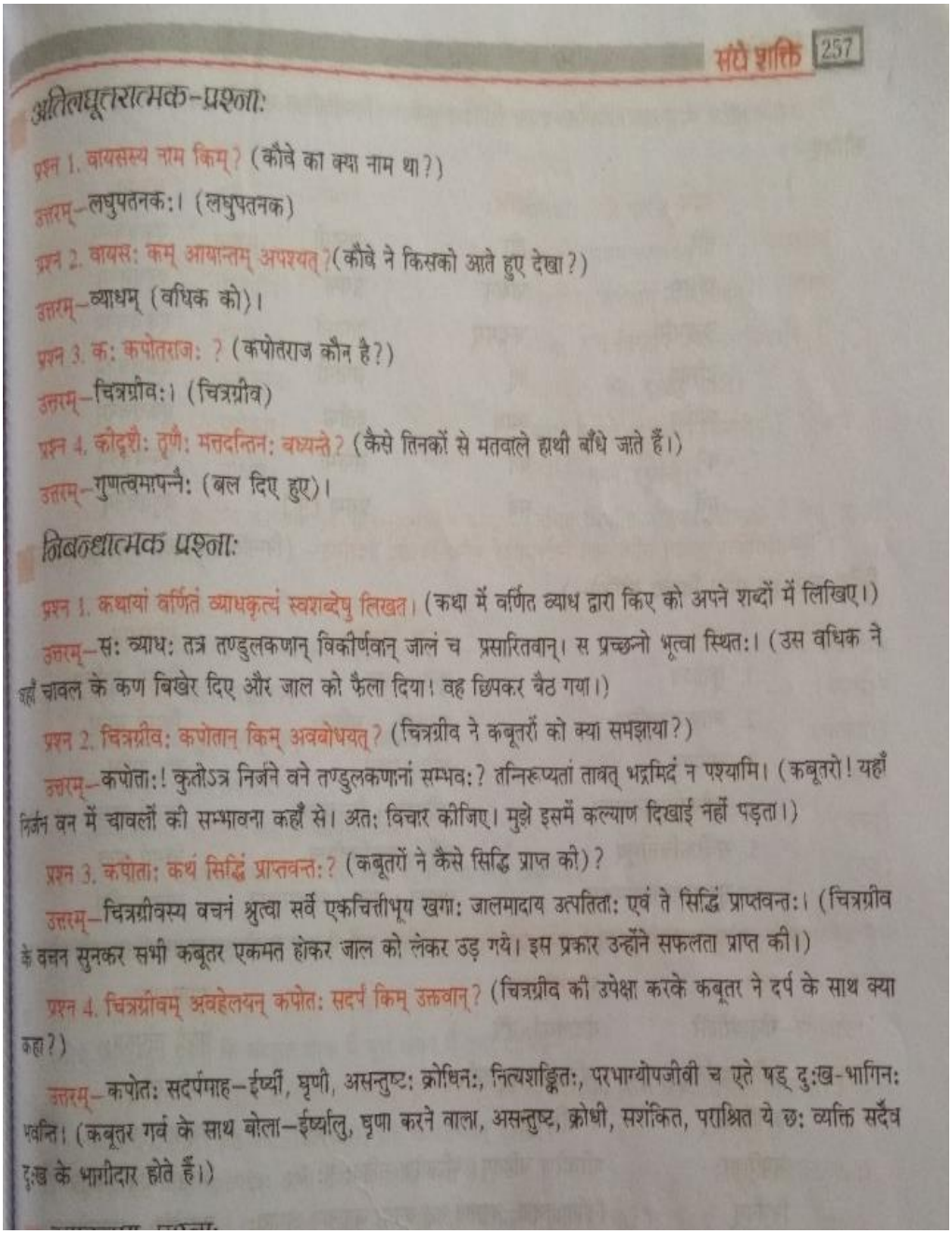

W : www.vsajaipur.com | E : vsajaipur@gmail.com M. : +91 9460356652, 8058999828
Add. : 84, Krishna Vihar, Behind Narayan Niwas, Gopalpura Bypass, Jaipur - 302015
/vsajaipur | /vsajaipur | /vidyashreeacademy | /vsa_jaipur

Class 10 Sub-Sanskrit Ch-2 Date:17 -7-20

दिए गए कार्य को Copy में पूर्ण करें।

अतिलघूत्तरात्मक-प्रश्नाः

प्रश्न 1. वायसस्य नाम किम्? (कौवे का क्या नाम था?)

उत्तरम्–लघुपतनकः। (लघुपतनक)

प्रश्न 2. वायसः कम् आयान्तम् अपश्यत्?(कौवे ने किसको आते हुए देखा?)

उत्तरम्–व्याधम् (वधिक को)।

प्रश्न 3. कः कपोतराजः ? (कपोतराज कौन है?)

उत्तरम्–चित्रग्रीवः। (चित्रग्रीव)

प्रश्न 4. कीदृशैः तृणैः मत्तदन्तिनः बध्यन्ते? (कैसे तिनकों से मतवाले हाथी बाँधे जाते हैं।)

उत्तरम्–गुणत्वमापन्नैः (बल दिए हुए)।

निबन्धात्मक प्रश्नाः

प्रश्न 1. कथायां वर्णितं व्याधकृत्यं स्वशब्देषु लिखत। (कथा में वर्णित व्याध द्वारा किए को अपने शब्दों में लिखिए।)

उत्तरम्–सः व्याधः तत्र तण्डुलकणान् विकीर्णवान् जालं च प्रसारितवान्। स प्रच्छन्नो भूत्वा स्थितः। (उस वधिक ने वहाँ चावल के कण बिखेर दिए और जाल को फैला दिया। वह छिपकर बैठ गया।)

प्रश्न 2. चित्रग्रीवः कपोतान् किम् अवबोधयत्? (चित्रग्रीव ने कबूतरों को क्या समझाया?)

उत्तरम्–कपोताः! कुतोऽत्र निर्जने वने तण्डुलकणानां सम्भवः? तन्निरूप्यतां तावत् भद्रमिदं न पश्यामि। (कबूतरो! यहाँ निर्जन वन में चावलों की सम्भावना कहाँ से। अतः विचार कीजिए। मुझे इसमें कल्याण दिखाई नहीं पड़ता।)

प्रश्न 3. कपोताः कथं सिद्धिं प्राप्तवन्तः? (कबूतरों ने कैसे सिद्धि प्राप्त की)?

उत्तरम्–चित्रग्रीवस्य वचनं श्रुत्वा सर्वे एकचित्तीभूय खगाः जालमादाय उत्पतिताः एवं ते सिद्धिं प्राप्तवन्तः। (चित्रग्रीव के वचन सुनकर सभी कबूतर एकमत होकर जाल को लेकर उड़ गये। इस प्रकार उन्होंने सफलता प्राप्त की।)

प्रश्न 4. चित्रग्रीवम् अवहेलयन् कपोतः सदर्पं किम् उक्तवान्? (चित्रग्रीव की उपेक्षा करके कबूतर ने दर्प के साथ क्या कहा?)

उत्तरम्–कपोतः सदर्पमाह–ईर्ष्यी, घृणी, असन्तुष्टः क्रोधिनः, नित्यशङ्कितः, परभाग्योपजीवी च एते षड् दुःख-भागिनः भवन्ति। (कबूतर गर्व के साथ बोला–ईर्ष्यालु, घृणा करने वाला, असन्तुष्ट, क्रोधी, सशंकित, पराश्रित ये छः व्यक्ति सदैव दुःख के भागीदार होते हैं।)